

सुनहरे सपने देखने वाला सुन्दर पक्षी



शब्दांकन : कङ कङ
चित्रांकन : च्याङ छङ्ग्रान
ऊ ताएशङ

सुनहरे सपने देखने वाला सुन्दर पक्षी

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

प्रथम संस्करण १६८०
द्वितीय संस्करण १६८३

प्रकाशक : विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : विदेशी भाषा मुद्रणालय
१६ पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोची शूत्येन)
पो. ग्रा. बाक्स ३६६, पेइचिङ



१. किसी समय की बात है, एक सुन्दर नन्हा पक्षी था। उसे अपनी सुन्दरता पर बड़ा नाज था और वह बड़ा घमण्डी हो गया था।



२. उसके पक्षी-दोस्त उसके मिथ्याभिमान पर हंसते थे। उन्होंने एक दिन उससे कहा : "यदि तुम्हारे अन्दर किसी काम को करने की योग्यता नहीं है, तो ऐसी खूबसूरती किस काम की है ?"



३. "योग्यता नहीं है ?" सुन्दर नन्हा पक्षी उनकी इस बात से चिढ़कर मन ही मन बोला, "तो क्या हुआ ? मैं जल्दी ही सब कुछ सीख सकता हूं।"



४. तभी उसे एक उकाब आकाश में उड़ता दिखाई दिया। नन्हे पक्षी ने अपने मन में कहा, "किसी उड़ाकू-वीर की तरह आसमान की सैर करने में कितना मजा आएगा! काश, मैं भी उस उकाब की तरह उड़ सकता!"



५. नन्हा पक्षी चिल्लाकर बोला : "उकाब चाचा, क्या ग्राप मुझे उड़ना सिखा सकते हैं ? मैं भी ग्रापकी तरह ग्राकाश की बुलन्दियों में उड़ना चाहता हूं।" लेकिन उकाब इतनी ऊंचाई पर उड़ रहा था कि उसे नन्हे पक्षी की ग्रावाज बिलकुल सुनाई नहीं दी।



६. अब वह क्या करे ? अचानक उसे एक तरकीब सूझी। वह उड़ते हुए उकाब की प्रत्येक क्रिया को ध्यान से देखने लगा और उसकी नकल करने लगा।



७. नन्हे पक्षी ने अपनी टांगें मोड़ लीं और उकडूं बैठकर अपने पंख फैला दिए। उसने अपनी आंखें भी बन्द कर लीं। उसने सोचा कि उसे इतनी ऊंचाई से नीचे नहीं देखना चाहिए, वरना चक्कर आ जाएगा।



८. इसके वाद वह कल्पना करने लगा कि वह उकाब की तरह ग्राकाश में बहुत ऊंचाई पर उड़ रहा है ग्रौर उसके तमाम दोस्त उसके इस साहसिक कार्य की प्रशंसा कर रहे हैं। ग्रपनी कल्पना में उसने ग्रपने कुछ दोस्तों को वाह-वाह करते हुए भी सुना।...



९. कितना घमण्डी था वह ! वह इस हर्षप्रद दृश्य को देखने की इच्छा को दबा नहीं सका, और उसने धीरे से अपनी आंखें खोल दीं । अरे, वह तो अभी पेड़ पर ही बैठा हुआ है, वहां से हिला तक नहीं !



१०. नन्हा पक्षी कुछ हताश हो गया। तभी उसे जंगली हंसों का एक जोड़ा ऊपर उड़ता दिखाई दिया, और उसके मन की आशा पुनः जाग उठी। उसने सोचा क्यों न इन हंसों से कहूं कि वे मुझे उड़ना सिखाएं।



११. जब जंगली हंस ग्राराम करने के लिए ग्राकाश से नीचे ग्रा गए, तो वह जल्दी से उनके पास गया ग्रौर विनती करने लगा, "हंस चाचा, कृपया मुझे उड़ना सिखाएं ! उकाब चाचा ग्रौर ग्रापकी तरह मैं भी ग्रासमान का उड़ाकू-वीर बनना चाहता हूं ।" जंगली हंस खुशी से तैयार हो गया ।



१२. जंगली हंस ने नन्हे पक्षी को धीरज से उड़ना सिखलाना शुरू किया : "अपने पंख पूरी तरह फैला लो और फिर उन्हें जोर से ऊपर-नीचे करो !" जंगली हंस बहुत ही धैर्यवान शिक्षक था। नन्हा पक्षी बड़े उत्साह से उड़ना सीखने लगा।



१३. पहले दिन के अभ्यास के बाद, वह थोड़ा-थोड़ा उड़ने लगा। जंगली हंस ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा : "जमीन से थोड़ा ऊपर उठ जाना ही काफी नहीं है। अच्छी तरह उड़ने के लिए तुम्हें कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उड़ने का अभ्यास करना चाहिए।"



१४. दो दिन बीत गए। नन्हा पक्षी उड़ने तो लगा था, लेकिन बहुत ऊंचा नहीं। उसने चिन्तित होकर कहा : "हंस चाचा, मेरे पंख इतने छोटे हैं कि मैं ज्यादा ऊंचा नहीं उड़ पाता।" जंगली हंस ने उत्तर दिया : "पंख छोटे हैं तो क्या हुआ ? तुम हलके भी तो हो। अच्छी तरह अभ्यास करते रहो, जरूर ऊंचा उड़ सकोगे।"



१५. तीसरे दिन नन्हा पक्षी बेहद उदास दिखाई दे रहा था। ज्यादा ऊंचाई पर उड़ना उसके वस की वात नहीं, यह सोचकर वह ग्रपने ग्रभ्यास को छोड़ने को तैयार हो गया। इसलिए जब जंगली हंस बड़े उत्साह से उसे उड़ना सिखाने के लिए ग्राया, तो वह पेड़ों की पत्तियों में जाकर छिप गया तथा उसने निश्चय कर लिया कि वह ग्रौर ग्रधिक उड़ना नहीं सीखेगा।



१६. एक दिन उसने मदारिन बत्तखों के एक जोड़े को तालाब में तैरते देखा। मन ही मन उनकी सराहना करते हुए वह सोचने लगा : कितना अच्छा हो यदि मैं भी तैरना सीख लूं और पानी का तैराक-वीर बन जाऊं।



१७. वह उड़कर कुमुदनी के पत्ते पर जा बैठा और कहने लगा : "दीदी, कृपया मुझे तैरना सिखाओ ! मैं एक दक्ष तैराक बनना चाहता हूं।" मदारिन वत्तखों ने उत्तर दिया : "ठीक है। अगर तुमने सीखने का पक्का इरादा कर लिया है, तो हम अवश्य तुम्हें तैरना सिखाएंगी।"



१८. नन्हे पक्षी ने तैरना सीखना शुरू कर दिया। लेकिन पानी में वह केवल दो-चार बार ही अपने पैर चलाकर थोड़ा-सा आगे गया होगा कि डुबकी खा गया और उसके मुंह व पेट में पानी चला गया। वह व्याकुल होकर चिल्ला पड़ा। मदारिन वत्तखों ने उसे सान्त्वना दी : "डरो मत। तैरना सीखते समय थोड़ा-सा पानी तो पेट में चला ही जाता है।"



१९. अगले दिन फिर नन्हे पक्षी के पेट में पानी चला गया। इससे परेशान होकर उसने सोचा कि वह अब और तैरना नहीं सीखेगा। उसका हौसला बढ़ाने के लिए मदारिन बत्तखों ने उसे बहुत समझाया, फिर भी उसने उनकी एक न सुनी और पंख फड़फड़ाता हुआ पानी से निकलकर तालाब के किनारे जा पहुंचा।



२०. तभी वे जंगली हंस उसको ढूंढ़ते हुए वहां ग्रा पहुंचे ग्रौर बोले : "ऐ सुन्दर नन्हे पक्षी, इतने दिन तुम कहां रहे ? हम हर जगह तुम्हारी तलाश करते रहे। क्या ग्रब तुम उड़ना सीखकर ग्रासमान का उड़ाकू-वीर बनना नहीं चाहते ?"



२१. "नहीं ! उड़ने में बिलकुल मजा नहीं आता," उसने अपने सिर को झटका देते हुए कहा और वहां से चला गया।



२२. नन्हा पक्षी जंगल में गया, जहां उसने एक भरतपक्षी को गाते हुए सुना। उसका गाना इतना मधुर था कि वह उस पर मोहित हो गया।



२३. उसके मन में भरतपक्षी से गाना सीखने की इच्छा जाग उठी। उसने सोचा : उड़ना सीखने का काम तो बहुत थकाने वाला है और तैरना सीखते समय ढेर सारा पानी निगलना पड़ता है। गाना सीखना जरूर आसान होगा। गवैया बनना भी कोई बुरा नहीं है !



२४. नन्हे पक्षी ने भरतपक्षी से पूछा : "भइया, क्या तुम मुझे गाना सिखाओगे ? मैं एक गवैया बनना चाहता हूं।" भरतपक्षी ने बड़े उत्साह से उत्तर दिया, "अवश्य ! लेकिन तुम्हें संगीत के सरगम का प्रतिदिन अभ्यास करना होगा और सुबह जल्दी उठकर मेरे पास आना होगा।"



२५. अगले दिन से, नन्हे पक्षी ने भोर के समय संगीत का अभ्यास करना प्रारम्भ कर दिया। भरतपक्षी भी उसके साथ-साथ संगीत के स्वरों को बार-बार दोहराता। शुरू-शुरू में नन्हे पक्षी को संगीत सीखने का बड़ा जोश था, इसलिए उसने बड़ी लगन के साथ उसका अभ्यास किया।



२६. लेकिन अगले दिन कुछ ही देर अभ्यास करने के बाद, नन्हे पक्षी का मन ऊब गया और वह भरतपक्षी से बोला : "मुझे जल्दी से गाना सिखा दो। मुझे सरगम का अभ्यास करते रहना पसन्द नहीं।" भरतपक्षी ने बड़े धीरज से उसे समझाया : "पहले सरगम का अभ्यास करो, तभी तुम अच्छी तरह गाना गा सकते हो।"



२७. तीसरे दिन, नन्हे पक्षी की कमजोरी पुनः जाहिर हो गई। वह सुबह बहुत देर तक सोता रहा। सुबह-सुबह उठकर अभ्यास करने का उसका कोई इरादा नहीं था।



२८. भरतपक्षी उसे बुलाने गया, लेकिन उसने बड़ी अधीरता से जवाब दिया : "रोज-रोज इतने सवेरे उठना मेरे बस का नहीं है। भइया, तुम्हें बहुत, बहुत धन्यवाद ! लेकिन मैं अब संगीत की और शिक्षा लेना नहीं चाहता।" भरतपक्षी निराश होकर वहां से चला गया।



२९. एक दिन नन्हे पक्षी को कहीं निकट से "दु, दु, दु" की आवाज आती सुनाई दी। वह उसी तरफ चल दिया जिधर से वह आवाज आ रही थी। थोड़ी दूर जाने के वाद उसने देखा कि एक कठफोड़वा बीमार पेड़ का इलाज कर रहा है। "कठफोड़वा दादा एक प्रसिद्ध डाक्टर हैं," उसने मन ही मन कहा। "यह सचमुच एक वहुत अच्छा पेशा है।"



३०. नन्हे पक्षी ने कठफोड़वे से अनुरोध किया : "कठफोड़वा दादा, क्या मुझे बीमार पेड़ों का इलाज करना सिखाएंगे ? मैं वादा करता हूं कि बड़ी मेहनत से सीखूंगा ।" कठफोड़वे ने खुशी से उत्तर दिया : "अवश्य ! लेकिन तुम कीड़ों से तो नहीं डरते ?"



३१. नन्हे पक्षी ने आश्चर्य से कहा : "कीड़े ? मैं . . . मैं किसी भी चीज से नहीं डरता ।" यह सुनकर कठफोड़वा बोला : "यदि तुम पेड़ों के डाक्टर बनना चाहते हो, तो तुम्हें उन कीड़ों से नहीं डरना चाहिए जो पेड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं। तुम्हें उनका बहादुरी से सफाया कर देना चाहिए ।" नन्हे पक्षी ने सिर हिलाकर अपनी सहमति प्रकट की ।



३२. कठफोड़वे ने नन्हे पक्षी को कीड़े पकड़ना सिखाना शुरू कर दिया। लेकिन तभी उसकी नजर एक इल्ली पर पड़ी और वह डर से चीख पड़ा। इस प्रकार नन्हे पक्षी का डाक्टर बनने का सपना भी अधूरा रह गया।



३३. उसके बाद से सुन्दर नन्हे पक्षी की किसी भी काम को सीखने में कोई रुचि नहीं रह गई, और वह अपना सारा समय आवारागर्दी में नष्ट करने लगा। वह यह सोचकर अपने मन को सान्त्वना देता रहता कि अपने खूबसूरत पंखों के सहारे, बिना किसी हुनर या योग्यता के अच्छी तरह जीवन व्यतीत कर सकता है। "मैं क्यों बेकार में मुसीबत मोल लूं?" वह अपने आपसे कहता।



३४. धीरे-धीरे मौसम ठंडा होने लगा ग्रौर पेड़ों की पत्तियां पीली पड़ती गईं। उसके सभी पक्षी-मित्र ग्राने वाली सर्दियों के लिए घोंसला बनाने ग्रौर खाना इकट्ठा करने में व्यस्त हो गए। केवल नन्हा पक्षी कोई काम नहीं करता था। प्रत्येक पक्षी उसे सलाह देता कि वह भी सर्दियां बिताने की तैयारी कर ले, लेकिन वह ग्रांखें बन्द करके ग्रपना सिर हिला देता ग्रौर उनकी बात पर ध्यान न देता।



३५. कुछ दिनों बाद, उत्तर से आने वाली ठंडी हवाएं चलने लगीं और हिमपात के कारण सारी भूमि वर्फ से ढक गई। सभी लोग सर्दियां विताने के लिए अपने-अपने घर के अन्दर चले गए, केवल वह सुन्दर नन्हा पक्षी ही जमे हुए वर्फीले खेतों में बाहर रह गया।



३६. सुन्दर नन्हा पक्षी अब किस मुंह से अपने दोस्तों से सहायता का अनुरोध कर सकता था? उसने न तो कोई काम सीखा था और न खाने के लिए पर्याप्त भोजन ही इकट्ठा किया था। वह ठंड और भूख से व्याकुल हो उठा, लेकिन सूखी घास के किसी ढेर में अपना सिर छिपाने के अलावा उसके सामने और कोई चारा भी नहीं था।



३७. जब उसके दोस्तों को उसकी हालत का पता चला, तो उन्हें बड़ा तरस आया। वे सुन्दर नन्हे पक्षी को ठंड से ठिठुरकर मरते नहीं देख सकते थे। इसलिए उन्होंने बड़ी सहृदयता से घोंसला बनाने में उसकी मदद की और उसे भोजन दिया। उन्होंने उसे यह भी समझाया कि उसे किसी भी काम को लगन से न करने की अपनी कमजोरी को दूर करना चाहिए।



३८. उनके इस आचरण का सुन्दर नन्हे पक्षी के दिल पर गहरा असर पड़ा। उसे अपनी कमजोरी पर बड़ा पछतावा हुआ और वह अपने पक्षी-दोस्तों से खेदपूर्वक बोला : "अब से में तुम सब से बड़ी विनम्रता के साथ नए-नए हुनर सीखूंगा। तुम लोग मेरी करनी की जांच करो!" सब ने अपने पंख फड़फड़ाकर उसकी प्रगति का स्वागत किया।



美 丽 的 空 想 家

耿 耿 改编

姜成安
吴带生 绘画

外文出版社出版

（中国北京百万庄路24号）

外文印刷厂印刷

中国国际书店发行

1980年（20开）第一版

1983年第二次印刷

编号：（印地）8050—1990

00050

88－H－152P